L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - I
PAPER - II
PSYCHOLOGY (Honours)
TOPIC - Define Attitude and Discuss its characteristics.

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assistant professor, Guest Teacher
V.S.J College RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumardbg2018@gmail.com

Q. अभिवृत्ति को परिभाषित, तथा इसकी विशेषताओं का वर्णन।

अभिवृत्ति (Attitude) शब्द की Aptus शब्द से हुई है। Aptus शब्द लैटिन भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ योग्यता या उपयुक्तता है। अभिवृत्ति एक परिकल्पनात्मक तत्व है। अभिवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता है। इसके प्रभावों को अनुभव किया जा सकता है। अभिवृत्ति एक परिकल्पनात्मक तत्व होते हुए भी मनोवैज्ञानिकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है। अभिवृत्ति का संबंध अनुभव और व्यवहार के संगठन से है। सामाजिक व्यवहार की अभिव्यक्ति और निर्धारण में अभिवृत्तियों की महत्वपूर्ण है। अभिवृत्तियों के महत्व को आज के अधिकांश समाज मनोवैज्ञानिक स्वीकार करते हैं। अपने वातावरण के कुछ पक्षों के प्रति व्यक्ति के निश्चित भाव विचार और कार्य करने की पूर्व प्रवृत्ति ही अभिवृत्ति कहलाती है। सामान्यतः अभिवृत्ति को परिभाषित किसी वस्तु या समूह के संबंध में प्रत्यक्षात्मक बाह्य उत्तेजनाओं की उपस्थिति में व्यक्ति की स्थिति और प्रत्युत्तर तत्परता के रूप में की जाती है। अभिवृत्ति किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति की जाने वाली उच्च ऋणात्मक या धनात्मक मूल्यांकन परक प्रतिक्रिया है। जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के विश्वासों, भावों या निर्दिष्ट व्यवहार के माध्यम होती है।

Scanned with CamScanner

अभिवृत्ति किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति की जाने वाली कुछ ऋणात्मक या धनात्मक मूल्यांकन परक प्रतिक्रिया है। जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के विश्वासों, भावों या निर्दिष्ट व्यवहार के माध्यम से होती है। अभिवृत्ति वह स्थायी मानसिक तत्परता या प्रवृत्ति है। व्यक्ति की प्रत्यक्षात्मक और भावात्मक प्रक्रियाओं के संगठित प्रत्युत्तर की तत्परता है। जिसका संगठन या निर्माण अनुभवों के आधार पर होता है। और जिसका व्यवहार पर गत्यात्मक और या निर्देशात्मक प्रभाव पड़ता है।

अभिवृत्ति किसी भी व्यक्ति या वस्तु या उत्तेजना के प्रति हो सकती है। यह व्यक्ति वस्तु और उत्तेजना समूहों के संबंध में भी हो सकती है। उदाहरण के लिए माँ में अपने नवजात शिशु के संरक्षण की अभिवृत्ति होती है। इसी अभिवृत्ति के कारण वह उसका संरक्षक है। रोते हुए शिशु की सब काम छोड़ कर दौड़कर उसके पास जाती है। और उसे हर प्रकार से चुप कराने का प्रयत्न करती है। यह अभिवृत्तियाँ माँ में शिशु के प्रति ही नहीं होती हैं। बालक और बच्चे में माँ के प्रति, पति में पत्नी के प्रति, पत्नी में पति के प्रति अभिवृत्तियाँ होती हैं। परिवार और समाज के सभी सदस्यों में एक दूसरे के प्रति धनात्मक, ऋणात्मक अभिवृत्तियाँ पायी जाती हैं। यह देखा गया है। अपरिचित की अपेक्षा परिचित व्यक्तियों में एक दूसरे के प्रति अभिवृत्तियाँ अधिक मात्रा में और तीव्रता में पायी जाती हैं। यह आवश्यक नहीं है। यदि एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के प्रति ऋणात्मक अभिवृत्ति हो तो दूसरे व्यक्ति में भी ऋणात्मक अभिवृत्ति होगी। दो व्यक्तियों में एक दूसरे के प्रति ऋणात्मक अभिवृत्ति हो सकती है। धनात्मक भी हो सकती है। और मिश्रित भी हो सकती है। किसी एक व्यक्ति में

धनात्मक अभिवृत्ति के और प्रकार भी ऋणात्मक।

अभिवृत्तियों की विशेषताएँ।

(i) अभिवृत्तियाँ अधिगमित होती है। व्यक्तियों में जितनी भी अभिवृत्तियाँ पायी जाती हैं वह प्रायः अर्जित और अधिगमित होती है अभिवृत्तियाँ जन्मजात नहीं होती है, वस्तु व्यक्ति, घटना या समूह आदि के संबंध में अभिवृत्तियों को व्यक्ति सीखता है।

(ii) अभिवृत्तियाँ सापेक्षिक रूप से स्थायी होती है। एक व्यक्ति दूसरे लोगों के संबंध में जो अभिवृत्तियाँ अधिगमित करता है उन अभिवृत्तियों की प्रकृति बहुत कुछ स्थायी होती है। अभिवृत्तियों में स्थिरता और निरन्तरता का गुण पाया जाता है। नये अनुभवों और नये संगठन के आधार पर अभिवृत्तियाँ क्रमशः बदल भी जाती हैं। ऐसा बहुत कम होता है कि अभिवृत्ति अति शीघ्र, एक परिवर्तित हो जाती है।

(iii) विषय-वस्तु संबंधी :- अभिवृत्तियों में विषय-वस्तु संबंध पाया जाता है। प्रत्येक अभिवृत्ति में कम से कम एक विषय और एक वस्तु का होना आवश्यक है। जिस व्यक्ति में अभिवृत्ति का निर्माण और विकास होता है उस व्यक्ति के प्रति वह व्यक्ति विषय होता है तथा जिस व्यक्ति, वस्तु, घटना अथवा समूह आदि के संबंध में अभिवृत्ति होती है। उसको उस व्यक्ति की वस्तु कहते हैं। बिना वस्तु या पृष्ठभूमि के अभिवृत्तियों का निर्माण नहीं होता है।

(iv) प्रेरणात्मक क्रियात्मक तत्व :- प्रत्येक अभिवृत्ति में प्रेरणात्मक क्रियात्मक तत्व होते हैं। दूसरे शब्दों में व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ व्यक्ति को जिनके संबंध में वह अभिवृत्तियाँ होती हैं। उसके प्रति एक विशेष ढंग से अनुक्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

IV

(V) व्यवहार को दिशा प्रदान करती है। — व्यक्ति में पायी जाने वाली सभी अभिवृत्तियाँ न केवल उसकी विचारधारा और व्यवहार को प्रभावित करती हैं, यह अभिवृत्तियाँ बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि वह व्यक्ति दूसरे के साथ किस प्रकार की अन्तःक्रिया करेगा। दूसरे शब्दों में एक व्यक्ति का व्यवहार दूसरे व्यक्ति के साथ प्रेम और घृणापूर्ण होगा, पक्ष या विपक्ष में होगा, अथवा स्वीकृति और अस्वीकृति होगी, यह बहुत कुछ इस बात से ही निर्धारित और निर्देशित होता है। अतः कहा जा सकता है कि अभिवृत्तियाँ मानव जीवन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती हैं। साथ-साथ मानव व्यवहार को एक विशेष दिशा भी प्रदान करती है। यदि हमें एक व्यक्ति की अभिवृत्तियों का ज्ञान हो जाये तो हम उस व्यक्ति के भविष्य के संबंधी भी पूर्व कथन कर सकते हैं। क्योंकि, व्यक्ति का बहुत कुछ व्यवहार अपनी पूर्व निर्मित अभिवृत्तियों के अनुसार ही होता है।

(VI) संवेगों और अनुभूतियों से संबंधित :— प्रत्येक व्यक्ति की पायी जाने वाली अभिवृत्तियों का संबंध उस व्यक्ति के अनुभवों और उसके संवेगों से होता है। उपरोक्त विशेषताओं की व्याख्या के रिफ विद्वान यंग तथा आइजनिक आदि के विचारों के आधार पर निष्कर्ष बताई जाती है। यह मानसिक और स्नायविक तत्परता से संबंधित अवस्था है जो अनुभवों के माध्यम संगठित होती है तथा जिसकी व्यवहार पर गत्यात्मक और निर्देशात्मक प्रभाव पड़ता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date- 08/05/2020